जाति व्यवस्था में वर्तमान परिवर्तन एंव परिवर्तन के कारण–

भारत में स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद उत्पन्न नयी परिस्थितियों के कारण जाति व्यवस्था में कई परिवर्तन उत्पन्न हुए, जिसने जाति व्यवस्था के परम्परागत स्वरूप एंव नियमो को काफी शिथिल कर दिया।

(1) विज्ञान के बढ़ते प्रभाव के कारण पुरोहिती धर्म एंव विश्वासों पर लोगों का भरोसा कम हो रहा है, जिससे ब्राह्मणों की स्थिति में पहले की अपेक्षा गिरावत आयी हैं।

(2) आज के गतिशील जमानें में जातियों के माध्य खान-पान निषेध समाप्त हुए है, अब स्वच्छता पर ज्यादा जोर है ना कि जाति पर। इसी तरह वैज्ञानिक अविष्कारों के कारण अब व्यवसायों का क्षेत्र विस्तृत हो गया हैं। इन व्यवयायों में चयन का आधार योग्यता है ना कि जाति।

(3) यद्यपि आज प्रेम विवाह, अन्तर्जातीय विवाह, विलम्ब विवाह प्रचलन में है परन्तु अभी भी विवाह तय करते समय स्वजाति की ही प्राथमिकता देते हैं। अन्तर्विवाह की यह प्रवृति आज भी जाति-व्यवस्था को कायम बनाए हैं।

(4) निर्योग्यताओं से लदी निम्न जातियों स्वतन्त्रता के पश्चात् समानाधिकार प्राप्त हैं। अब जातिगत आधार पर भेद कानूनी रूप से दण्डनीय करार दिया गया हैं। इसी के साथ जाति पंचायतों एंव जाति संगठनों को भी खत्म किया गया हैं। जाति व्यवस्था को बनाए रखने में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं।

जाति में आने वाले इन परिवर्तनो में निहित कारणों को जानना आवश्याक है इसका प्रमुख कारण औद्योगीकरण और नगरीकरण हैं। इन प्रक्रियाओं ने बन्द समाज को गति प्रदान की। व्यवसाय की वजह से लोगों (विभिन्न जाति के) के बीच की दूरिया घटी। आधुनिक शिक्षा ने कुरीतियों के स्थान पर सहयोग को जन्म दिया। उदार एंव वैज्ञानिक दृष्टिकोण ने परम्परागत बंधन शिथिल किए। इसके अतिरिक्त विशेष विवाह अधिनियम, 1955 जैसे कनूनों ने धर्म, जाति, रंग के आधार पर भेदभाव को समाप्त किया। अनु 17 ने अस्पृश्ता को पूर्णतया समाप्त कर दिया। अंग्रेजों के आगमन से भारत में पाश्चात्य शिक्षा का आगमन हुआ, जो धर्मनिरपेक्षता समानता, स्वतन्त्रता पर आधारित थी। इससे भी समाज में भार्दचारा स्थापित हुआ। पश्चिमी शिक्षा एंव औद्योगिक विकास के कारण स्थानीय गतिशीलता में वृद्धि हुई, जिससे लोग एक-दूसरे के निकट आए। स्त्री शिक्षा में वृद्धि होने से महिलाओं में जागरूकता आयी। वे अनावश्यक कर्मकाण्डो को व्याज्य कर आगे बढ़ी। समाज में बढ़ी गतिशीलता ने एकाकीं परिवारों पर जोर दिया, जिससे रूढ़ियों का केन्द्र रहे संयुक्त परिवार टूटने लगें।

जाति प्रथा के कमजोर होनें में समाज सुधार आन्दोलन एंव राष्ट्रीय आन्दोलन के महत्व को भी रेखांकित करना आवश्यक हैं। सुधारकों ने जहाँ रूढ़ियों के विरूद्ध आवाज उठायी वही राष्ट्रीय आन्दोलन ने जाति-धर्म से परे सबको एक झण्डे के नीचे बिट्रिश हुकूमत के विरूद्व खड़ा किया।